आधुनिक शिक्षा प्रणाली में चारित्रिक विकास का विलापन

आकांक्षा सिंह

शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज (उ0प्र0)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिक भाग के बजाय सैद्धांतिक भाग पर जोर दिए जाने के कारण चारित्रिक विकास का हास् देखा जा सकता है, परंतु चारित्रिक विकास शिक्षा का एक विशेष पहल होने के साथ देश वासियों के चरित्र निर्माण की आधारशिला है। राष्ट्र की उन्नति और विकास का तभी संभव है जब मनुष्य चारित्रिक विकास कर सच्चाई, ईमानदारी, दया, धर्म एवं नैतिकता के मार्ग पर प्रशस्त हो। आधुनिक शिक्षा के द्वारा सिर्फ पैसा कमाने पर जोर देने का बजाय चारित्रिक विकास पर भी ध्यान दिया जाता रहे, जिससे राष्ट्र में प्रेम सौहार्द बनाए रखने में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विशेष योगदान रहे।

प्रस्तावना

आधुनिक शिक्षा प्रणाली समय के साथ विकसित हुई और पश्चिमी प्रणाली से प्रभावित है यह प्रौद्योगिकी में बदलाव और प्रगति से प्रभावित हुई है इस शिक्षा प्रणाली में ई बुक, वीडियो, व्यख्यान वीडियो, चैट 3डी, इमेजरी आदि तकनीक शामिल है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकी विकास को शामिल करने के लिए विकसित हुई है, इस शिक्षा प्रणाली के एक मात्र कमी यही है कि व्यवहारिक भाग के बजाय सैद्धांतिक भाग पर जोर दिया जाता है, जब प्रतिधारण, समझ और अवसरों की बात आती है तो कोई इंकार नहीं कर सकता कि आधुनिक शिक्षा अधिक प्रभावी है, लेकिन दूसरे पहलु को ध्यान दिया जाये तो शिक्षा का वास्तविक अर्थ होता है कुछ सीख कर अपने को पूर्ण बनाना , किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा समाजिक नियन्त्रण, चरित्रिक विकास तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है।

''हम वैदिक कालीन शिक्षा की आदर्शवादिता को आधुनिक शिक्षा के एक मूल सिद्धांत के रूप में ग्रहण कर सकते हैं और जीवन–निर्माण, चरित्र निर्माण तथा सादा भोजन और उच्च विचार को शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में स्थान दे सकते हैं।''
(डॉ0 महेश चन्द्र सिंघल)
('' भारतीय शिक्षक की वर्तमान समस्याएँ '' पुस्तक,)

केवल गायत्री मंत्र का ज्ञान रखने वाला चरित्रवान, ब्राह्मण, संपूर्ण वेदों का ज्ञाता पर चरित्रहीन विद्वान से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

(मनुस्मृति)

'' छात्रों का चरित्र निर्माण करना, शिक्षा का एक अनिवार्य उद्देश्य माना जाता था।

'' डॉ0 वेद मित्र ''

'' भारत सहित सारे संसार के कष्टों का का कारण यह है कि शिक्षा का संबंध नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के प्राप्ति से न रहकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है।''

'' राधाकृष्णन ''

एक बार गांधी जी से पूछा गया कि– ''जब भारत स्वतंत्र हो जाएगा तब आपकी शिक्षा का क्या उद्देश्य होगा ? उनका उत्तर था – चरित्र निर्माण''।

'' गांधी जी ''

''मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता और सबसे बड़ा रक्षक चरित्र है, शिक्षा नहीं ''।

'' स्पेन्सर''

आधुनिक शिक्षा प्रणाली का स्वरूप

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सबसे बड़ी कमी यह है कि यह विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करने के बजाय उसका नाश कर देती है, और नवयुवकों को जीवन के आरंभ से ही काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर का दास बना देती है। इसी का परिणाम है कि जब बीस–पच्चीस वर्ष की आयु में आजकल के विद्यार्थियों बी.ए., एम.ए., की डिग्रियों को लेकर लेकर जीवन क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। तो वे प्रायः निर्बल, निस्तेज और अनेक प्रकार के आधि–व्याधि के शिकार दिखाई पड़ते हैं। प्राचीन समय छात्र चौबीस–पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करके और हर तरह की कठोर जीवन को सहन करके पूर्ण शक्ति और उत्साह के साथ जीवन संग्राम में पदार्पण करते थे और आत्मविश्वास के साथ प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने को प्रस्तुत रहते थे। यही दोनों प्रणालियों का सर्व प्रधान अंतर है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकी विकास को शामिल करने के लिए विकसित हुई है, इस शिक्षा प्रणाली के एक मात्र कमी यही है कि व्यवहारिक भाग के बजाय सैद्धांतिक भाग पर जोर दिया जाता है, जब प्रतिधारण, समझ और अवसरों की बात आती है तो कोई इंकार नहीं कर सकता कि आधुनिक शिक्षा अधिक प्रभावी है।

सद्विचारों और सत्कर्मों की एकरूपता ही चरित्र है। जो अपनी इच्छाओं को नियंत्रित रखते है। और उन्हें सत्कर्मों का रूप देते हैं उन्हीं को चरित्रवान कहा जा सकता है। सयंत इच्छाशक्ति से प्रेरित सदाचार का नाम ही चरित्र है, चरित्र मानव जीवन की स्थाई निधि है, जीवन की स्थाई सफलता का आधार मनुष्य का चरित्र ही है। चरित्र मानव जीवन की स्थाई निधि है। सेवा, दया, परोपकार, उदारता, त्याग, शिष्टाचार और सद्व्यवहार आदि चरित्र के बाह्य अंग है जो सद्भाव, उत्कृष्ट चिंतन, नियमित–व्यवस्थित जीवन, शांत–गंभीर मनोदशा चरित्र के परोक्ष अंग है, तो किसी व्यक्ति के विचार, इच्छाएं, आकांक्षाएं और आचरण जैसे होगा, उन्हीं के अनुरूप चरित्र का निर्माण होता है। लेकिन आधुनिक युग में उत्तम चरित्र ह्रास है। उत्तम चरित जीवन के सही दिशा में प्रेरित करता है, चरित्र निर्माण में साहित्य का बहुत ही महत्व है जो विचारों को दृढ़ता व शक्ति प्रदान करने वाला साहित्य आत्म निर्माण में में बहुत योगदान करता है। इससे आंतरिक विशेषताएं जागृत होती है।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था उचित नहीं क्यों ? और विकल्प

भारत की प्राचीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का नैतिक विकास और चरित्र निर्माण था, लेकिन आधुनिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धनोपार्जन करना हो गया है। जिससे देश में अनेकों विकृतियां उत्पन हो गई हैं।

प्राचीन युग में भारती दार्शनिकों का अटल विश्वास था कि केवल लिखना पढ़ाना ही शिक्षा नहीं है, वरन नैतिक भावनाओं को विकसित करके चरित्र निर्माण करना परम आवश्यक है।

मनुस्मृति में लिखा है कि–

'' ऐसा व्यक्ति जो सद्चरित्र हो चाहे उसे वेदों का ज्ञान भले ही कम हो, उस व्यक्ति से कही अच्छा है जो वेदों का पंडित होते हुए भी शुद्ध जीवन व्यतीत न करता हो ''।

अतः प्रत्येक बालक के चरित्र का निर्माण करना उस युग में आचार्य का मुख्य कर्तव्य समझ समझा जाता था। इस संबंध में प्रत्येक पुस्तक के पन्नों पर सूत्र रूप में चरित्र संबंधी आदेश लिखे रहते थे, तथा समय–समय पर आचार के द्वारा नैतिकता के आदेश भी दिए जाते थे। बालकों के समक्ष राम, सीता, लक्ष्मण तथा हनुमान आदि महापुरुषों के उदाहरण प्रस्तुत किए जाते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि प्राचीन भारत की शिक्षा का वातावरण चरित्र–निर्माण सहयोग प्रदान करता था।

सद्चारों और सत्कर्मो की एकरूपता ही चरित्र है। जो अपनी इच्छाओं के नियंत्रित रखते हैं, और उन्हें सत्कर्मो का रूप देते हैं। उन्हीं को चरित्रवान कहा जाता है। संयत इच्छाशक्ति से प्रेरित सदाचार का नाम ही चरित्र है। चरित्र मानव जीवन की स्थाई निधि है। जीवन की स्थाई सफलता का आधार मनुष्य का चरित्र ही है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि–''प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही दैवीय गुणों से परिपूर्ण होता है। ये गुण सत्य, निष्ठा, समर्पण, साहस एवं विश्वास से जागृत होते है। इनको अपने आचरण में लाने से व्यक्ति महान एवं चरित्रवान बन सकता है। मनुष्य को महान बनने के लिए संदेह, इर्ष्या एवं द्वेष छोड़ना होगा।''

स्वामी विवेकानंद जी ने चरित्र निर्माण के 5 सूत्र दिये–''आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग''।

गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि ''मैंने सदैव ह्रदय की संस्कृति अथवा चरित्र निर्माण को प्रथम स्थान दिया है, तथा चरित्र निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है।

आचार्य नरेंद्र देव ने लिखा–

''सामाजिक संगठन में बिना महान परिवर्तन किए हमारा जिंदा रहना भी कठिन है। समाज के प्रश्न धर्म के दामन में मुंह छुपाने से हल न होगे, समाज की उन्नति करने का एक वैज्ञानिक तरीका है, उसको अपनाना होगा। पोंप का शासन फिर से प्रतिष्ठित नहीं किया जा सकता है। हां उसको प्रभाव का दुरूपयोग प्रतिक्रियावादी शक्तियॉ आज भी कर रही है। इस आधुनिक युग में रहस्यवाद की प्रतिष्ठा करना कठिन है। विज्ञान का सद्पयोग कीजिए, समाज मे आदर्श की प्रतिष्ठा के लिए मनुष्य के चरित्र की ओर ध्यान दीजिए न कि आधुनिकता को

छोड़ कपोल कल्पित बातों का फिर से जिंदा कीजिए। मनुष्य के चरित्र पर उसकी परिस्थितिं का प्रभाव अवश्य पड़ता है। किंतु ब्यक्तिगत चरित्र के गठन की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

निष्कर्ष

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है, यहां इस बात पर बल दिया गया है कि भावी पीढ़ी के चरित्र का निर्माण करना एक महत्वपूर्ण उद्देष्य अथवा कार्य है। हमें आधुनिक युग के साथ चलते हुए नए आदर्शो की प्रतिष्ठा करनी होगी और मनुष्य के चरित्र निर्माण अथवा विकास करना होगा। मनुष्य के चरित्र का निर्माण अथवा विकास करते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि चरित्र के निर्माण पर विद्यमान परिस्थिति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। अतः चरित्र निर्माण का कार्य प्रारंभ करने से पूर्व हमें वर्तमान परिस्थितियों पर भी शोध करना होगा।

चरित्र निर्माण को योजना बनाते समय हमें व्यक्तिगत चरित्र के गठन की ओर विशेष ध्यान देना होगा, क्योंकि चरित्रवान व्यक्ति ही समाज का सच्चा नेतृत्व कर सकते हैं। यह सत्य है कि सामाजिक प्रणालियॉ भी कम महत्वपूर्ण नहीं होती। किंतु आवश्यकता यह है कि अच्छी सामाजिक प्रणालियॉ भी स्वतः कुछ नहीं कर सकती। सामाजिक प्रणाली तभी सर्व हितकर हो सकती है जब उसको कार्यान्वित करने वाले व्यक्ति चरित्रवान और शिक्षित भी हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

आचार्य नरेंद्र देव
गुरु सरण दास त्यागी
(भारत में शिक्षा का विकास)
जे0 सी0 अग्रवाल
(उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा